अ
BGVS
गेंद निराली
मीठू की
राजेश जोशी की कविताएं

राजेश जोशी

हिंदी के वरिष्ठ और चर्चित कवि। कविताओं, कहानियों, नाटकों आदि की अनेक पुस्तकें प्रकाशित। साहित्य अकादमी सहित अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित। साहित्यिक, सांस्कृतिक आंदोलनों में सक्रिय हिस्सेदारी। भोपल में रहते हैं।

पुरबा जोशी (मीठू)

आई.आई.टी. मुंबई से इंडस्ट्रीयल डिज़ाईन विषय में डिज़ाईन की मास्टर उपाधि के उपरान्त अब वहीं सहायक प्राध्यापक हैं। फोटोग्राफी में गहरी रुचि।

मोनिका ननावरे

आई.आई.टी. मुंबई में विज़ुअल कम्यूनिकेशन में डिज़ाईन की स्नात्कोत्तर छात्रा।

गेंद निराली मीठू की

राजेश जोशी

आकल्पन और चित्रांकन
मीठू जोशी
मोनिका ननावरे

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

इस पुस्तक का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा बच्चों में रचनात्मकता और पठन-पाठन संस्कृति विकसित करने के लिए 'बाल पुस्तकमाला' के तहत किया गया है।

गेंद निराली मीठू की	**Gaind Niralee Meethu Ki**
राजेश जोशी	Rajesh Joshi
आकल्पन और चित्रांकन	**Visualization & Illustration**
मीठू जोशी, मोनिका ननावरे	Meethu Joshi, Monika Nanavare
पुस्तकमाला संपादक	**Series Editor**
मनोज कुलकर्णी	Manoj Kulkarnii
ग्राफिक्स	**Graphics**
अभय कुमार झा	Abhay Kumar Jha
कम्पेजिंग	**Composing**
प्रमोद मिश्रा	Pramod Mishra
प्रथम संस्करण	**First Edition**
जून, 2011	June, 2011
सहयोग राशि	**Contributory Price**
९० रुपये	Rs. 90

ISBN:-978-81-921705-0-3

मुद्रण	**Printing**
क्रिसेन्ट प्रिंट सॉल्यूशन्स	Crescent Print Solutions
नई दिल्ली - 110 018	New Delhi - 110 018

© पुरवा जोशी

ज्ञान विज्ञान प्रकाशन

BHARAT GYAN VIGYAN SAMITI

Basement of Y.W.A. Hostel, G Block, Saket, New Delhi - 110 017,
Phone : 011-2656 9943, Phone-Fax : 011-2656 9773
e-mail: bgvsdelhi@gmail.com, website : www.bgvs.org

गेंद निराली मीठू की

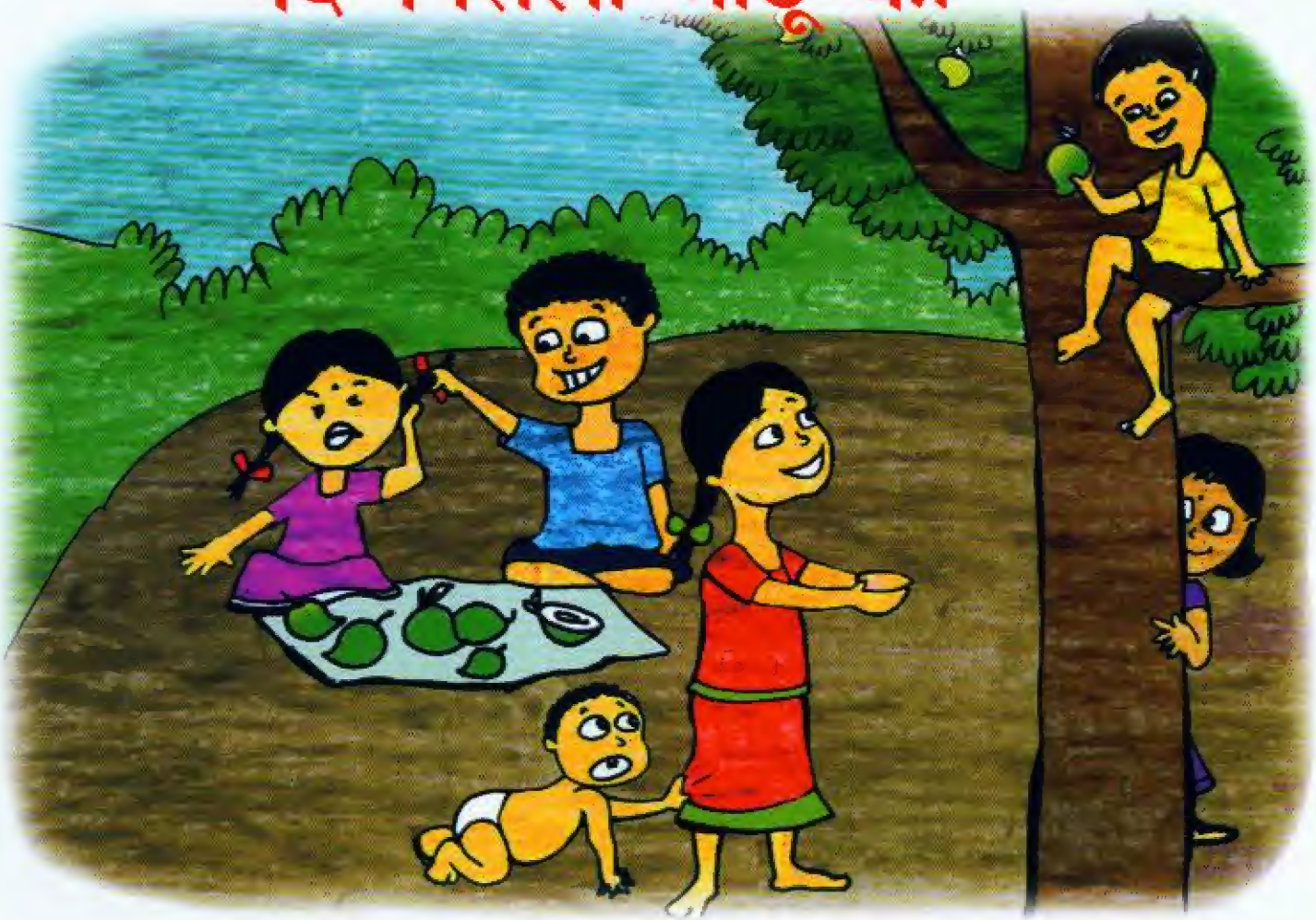

मीठू, श्वेता, पम्मम, मीतू, नेहा, मीलू, राजा, चीकू, रोबिन,
रिंकी, टीना, पिन्टू, दीपू, वर्षू, सोनू और अंकू के लिए ।

मीठू रानी

मीठू रानी
बड़ी सयानी
पीती दूध
बताती पानी

चुप चुप चुप चुप
गुप चुप गुप चुप
करती रहती
वो शैतानी!

आए बादल

आए बादल आए बादल
पानी जेबों में भर लाए।

इतने सारे ताल तलैया
कहां से तुम भर लाए
जेबों में भी कहीं ठहरता
पानी बुद्धू
बादल के पापा चिल्लाए

जेब उलट दी
उसने झट पट
पानी बरसा
टप टप टप टप।

गेंद निराली मीठू की

लाल लाल है
सूरज जैसी
धरती जैसी
गोल मटोल
गेंद निराली मीठू की
पता नहीं जिसका भूगोल!

छोटी सी यह पृथ्वी कैसी
एक आग के गोले जैसी

पेड़ पहाड़ न नदियाँ प्यारी
बसी हुई है फिर भी इसमें
सपनों की एक
दुनिया न्यारी

शेर न चीता
भालू न बंदर
हवा भरी है
इसके अंदर

अंतरिक्ष में इसे उछालो
एक नया तुम ग्रह बना लो
भर कर जिसे खिलौनों से
दुनिया एक नई बसालो।

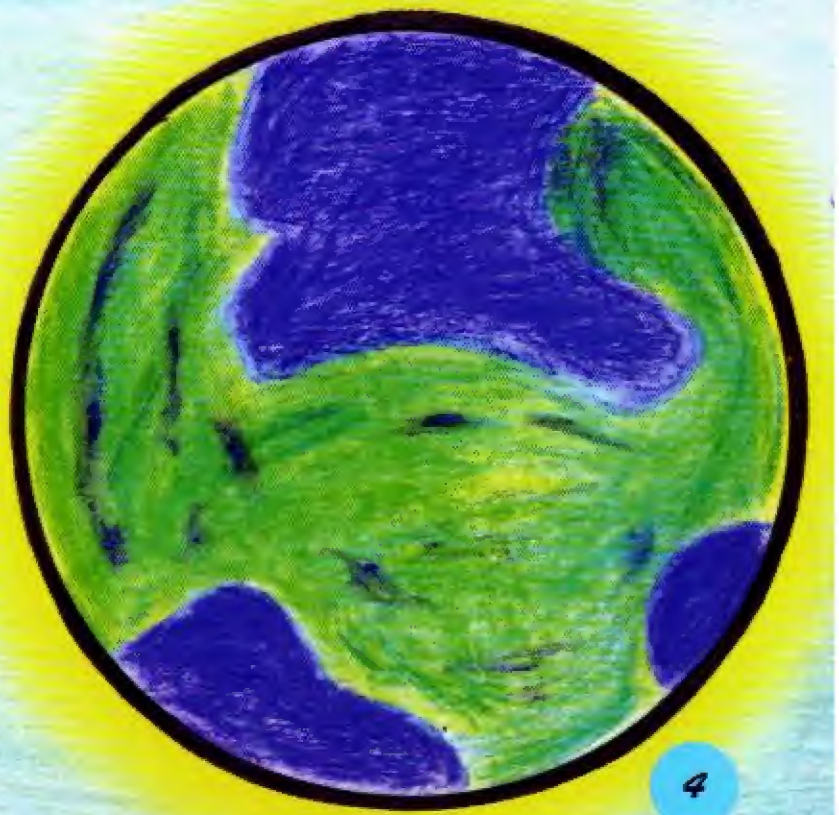

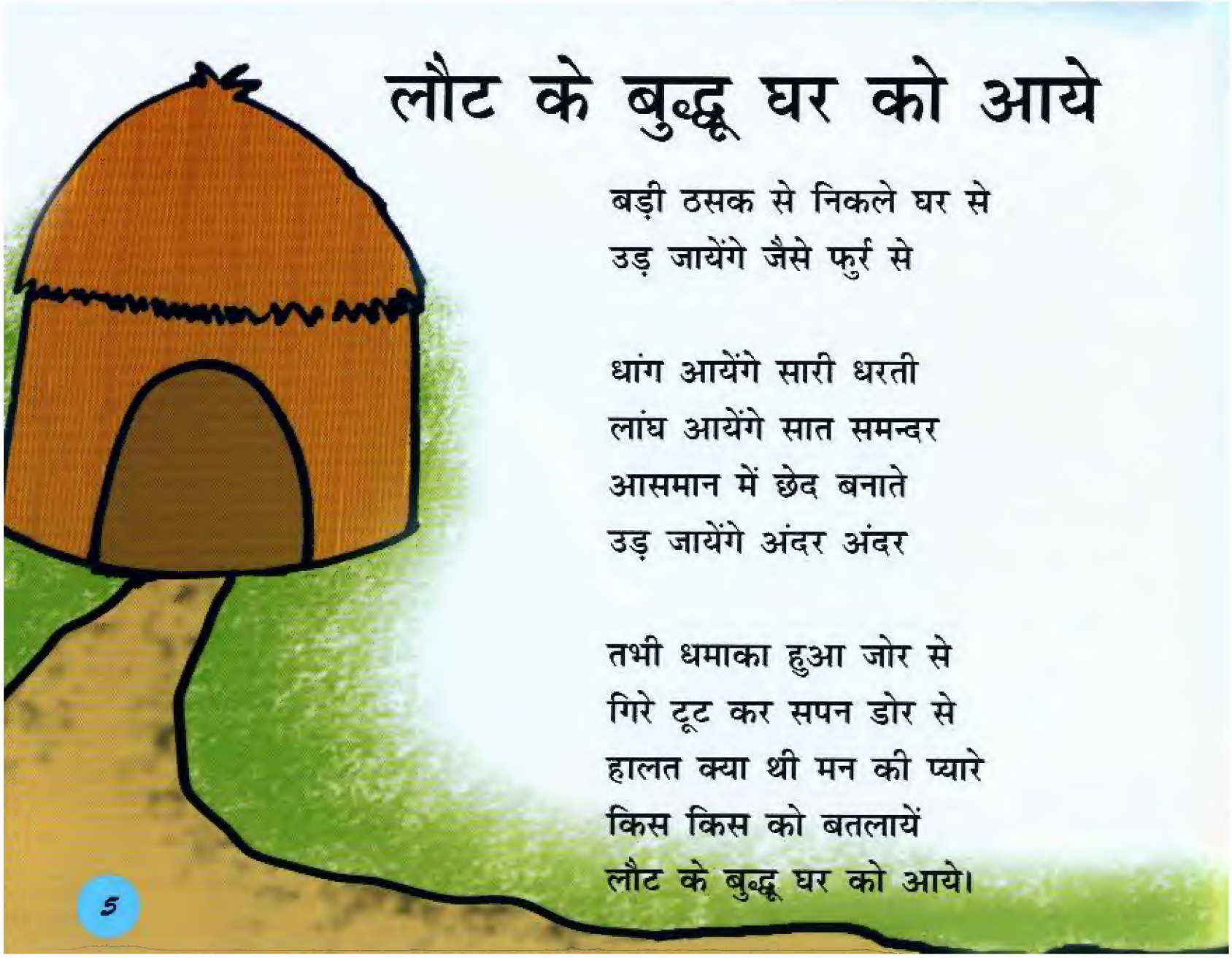

लौट के बुद्धू घर को आये

बड़ी ठसक से निकले घर से
उड़ जायेंगे जैसे फुर्र से

धांग आयेंगे सारी धरती
लांघ आयेंगे सात समन्दर
आसमान में छेद बनाते
उड़ जायेंगे अंदर अंदर

तभी धमाका हुआ जोर से
गिरे टूट कर सपन डोर से
हालत क्या थी मन की प्यारे
किस किस को बतलायें
लौट के बुद्धू घर को आये।

अभी मोड़ तक ही पहुंचे थे
गली छोर तक ही पहुंचे थे
बीच राह में अड़ा था कुत्ता
काला और बड़ा था कुत्ता

बहा पसीना नीचे नीचे
सांस रह गये खींचे खींचे
धरी रह गयी सारी शेखी
कुत्ते ने जब कान हिलाये
लौट के बुद्धू घर को आये।

कहीं नहीं हैं खेल तमाशे
कंधों पर बस लदी किताबें
एक पराई बोली बौड़म
भारी बस्ता बासी बातें

इसको छोड़ कहां भग जायें
अंदर जायें बाहर जायें
परेशान थे सोच सोच कर
तभी कहीं पापा चिल्लाये
लौट के बुद्धू घर को आये।

गिरे ताल में चंदा मामा

गिरे ताल में चंदा मामा
सबने देखा सबने देखा
फंसे जाल में चंदा मामा
सबने देखा सबने देखा

सबने देखा एक अचंभा
मछुआरे ने जाल समेटा
कहीं नहीं थे चंदा मामा
कहां गये जी चंदा मामा

मछुआरे की मति चकराई
झांक झरोखे बोलीं ताई
पानी में जो दिखती बुद्धू
वो तो हैं चंदा की परछाई!

जय बम भोला

सूंड उठा के हाथी बोला
जय बम भोला
जय बम भोला

बुढ़ा गया जंगल का राजा
दिन भर कहता आजा आजा

छोटा शावक चिढ़ा रहा है
लोमड़ियों को भिड़ा रहा है

मोरों की दुम पर है पैसा
नाच रहा है भालू कैसा

चीता अपनी हांक रहा है
जंगली भैंसा भाग रहा है

खड़ी बिल्लियां ताक रही हैं
बंदर रोटी बांट रहा है।

बादल है पानी का घोड़ा

बादल है पानी का घोड़ा
आकर नद्दी
प्यास बुझाई
धरती सींची
आग बुझाई

लगा धूप के
पंख रूपहले
नील गगन
में दौड़ा।

कोई नहीं है
इसका मालिक
कहीं नहीं है
इसका घर

भटक रहा यह
इधर उधर

तारे खाकर
पेट भरे यह

चमकाता बिजली का कोड़ा!
बादल है पानी का घोड़ा।

पूछ रही है मीठू रानी

घाघ भड्डरी कैसे ज्ञानी
बद्दल में भी नहीं है पानी
नाव कहां तैरायें पापा
पूछ रही है मीठू रानी

पानी बाबा कब आयेंगे
ककड़ी, भुट्टे कब खायेंगे
औलाती में कब नहायेंगे

कब बरसेगा
छम छम पानी
पूछ रही है
मीठू रानी!

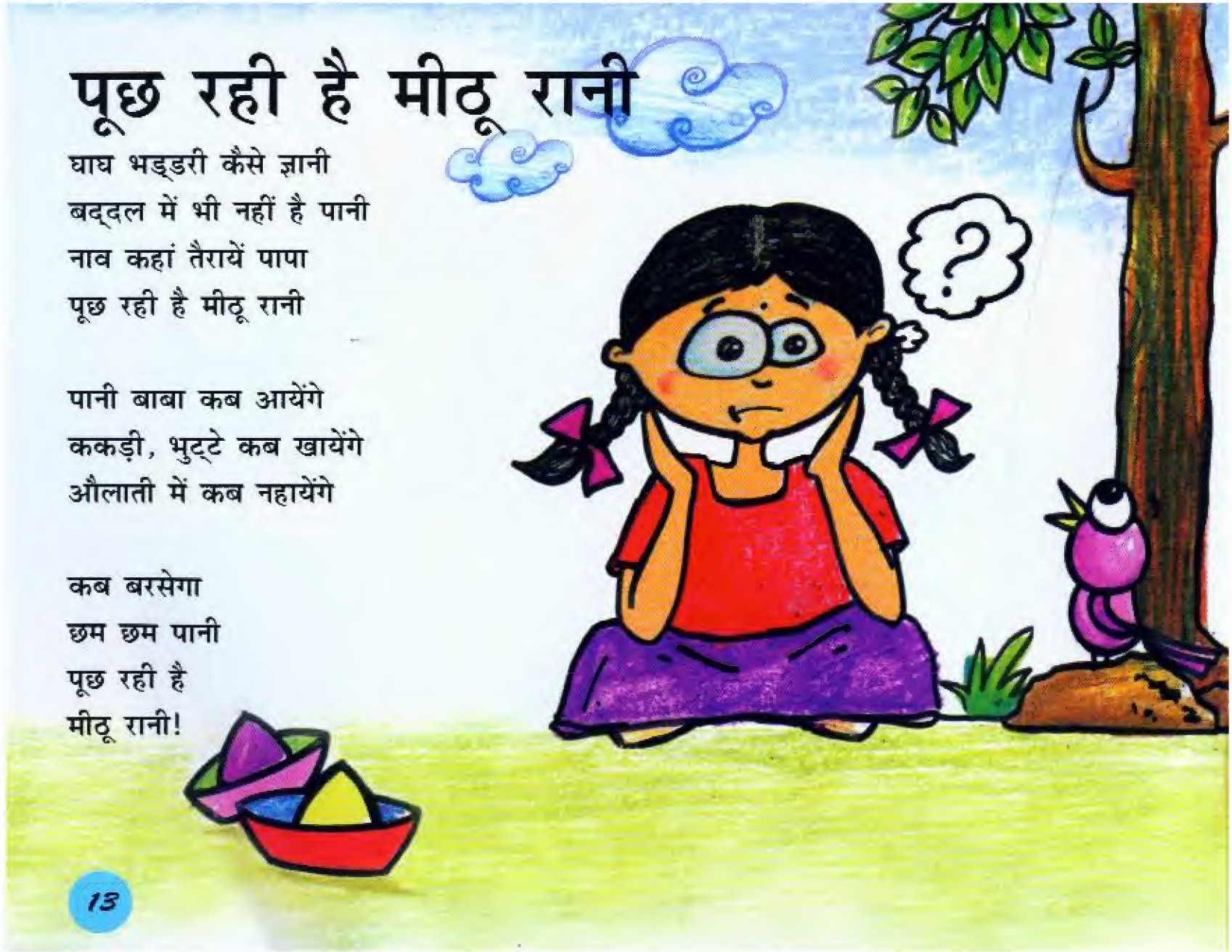

दो दो मामा

मीठू के हैं
दो दो मामा

सुबह सवेरे
इक आते हैं
पहन धूप का
धुला पजामा

दूजे मामा
बहुत हैं प्यारे
टोप में उनके
लाख सितारे

चेहरा उनका
चमक दमक है
कोट है लेकिन
बहुत पुराना ।

बोल चिया री जल्दी बोल

चिया आई
चिया आई
चिड़ा जी की
बिया आई

जरा रूपहले पंख तो खोलो
कहां छुपा है बटुआ बोलो

पान निकालो पान निकालो
जरा तम्बाखू उसमें डालो

एक दाढ़ में दाना लेकर
एक दाढ़ में इसे दबा लो

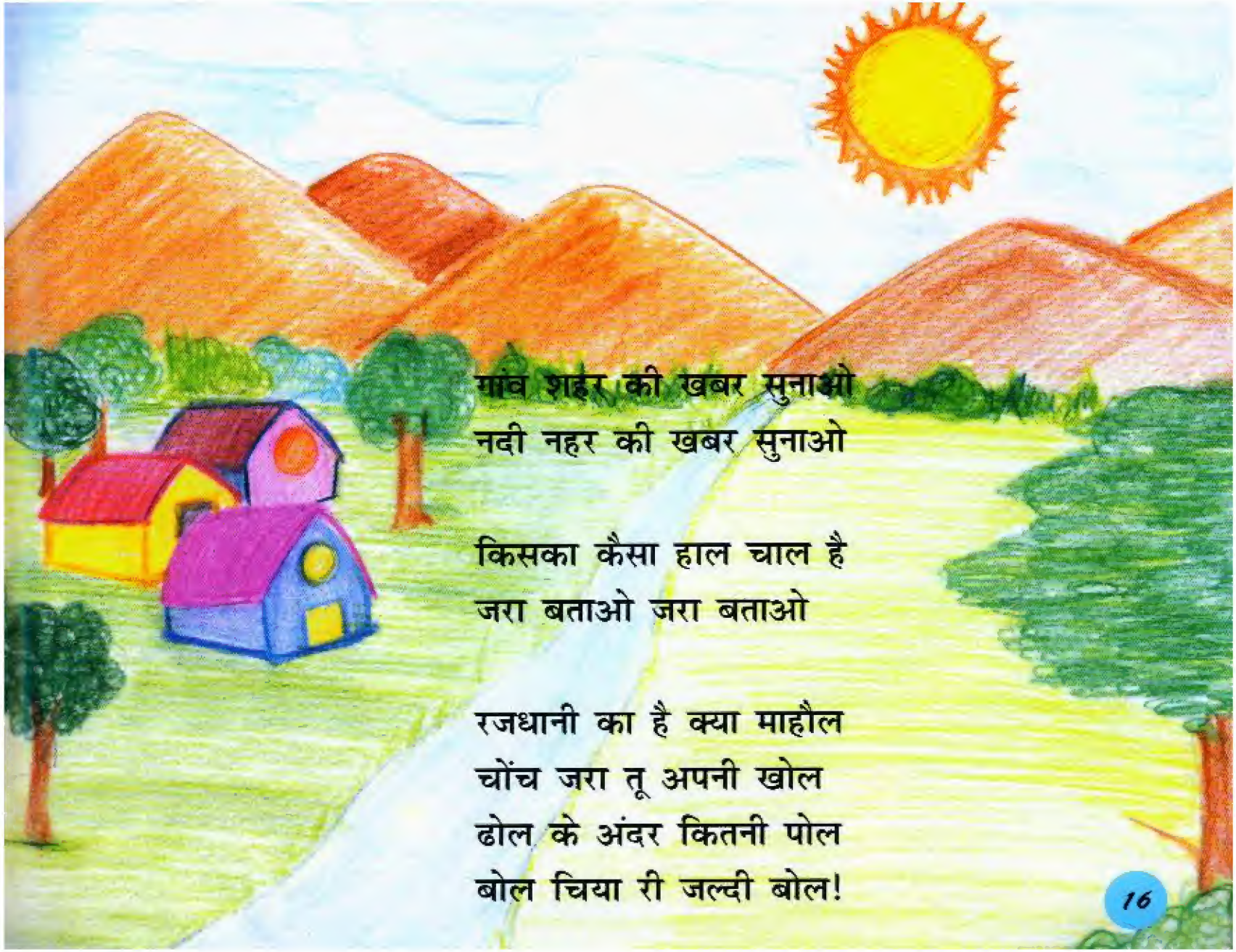
गांव शहर की खबर सुनाओ
नदी नहर की खबर सुनाओ
किसका कैसा हाल चाल है
जरा बताओ जरा बताओ
रजधानी का है क्या माहौल
चोंच जरा तू अपनी खोल
ढोल के अंदर कितनी पोल
बोल चिया री जल्दी बोल!

हाथी घोड़ा पालकी

हाथी घोड़ा पालकी
जय कन्हैया लाल की

सूरज चमके
चंदा चमके
चमके खूब सितारे
अक्षर सीखो
अक्षर सीखो
जो सबसे उजियारे

अक्षर अक्षर शब्द बनाओ
शब्द है
चीज कमाल की।

हाथी घोड़ा पालकी
जय कन्हैया लाल की

पतंग उड़ाओ
गेंद उछालो
चीजें सारी
देखो भालो

मापो धरती
मापो धरती
आसमान को
जरा नमालो

खोजो खोजो
नये सितारे
सैर करो
भोपाल की।

हाथी घोड़ा पालकी
जय कन्हैया लाल की।

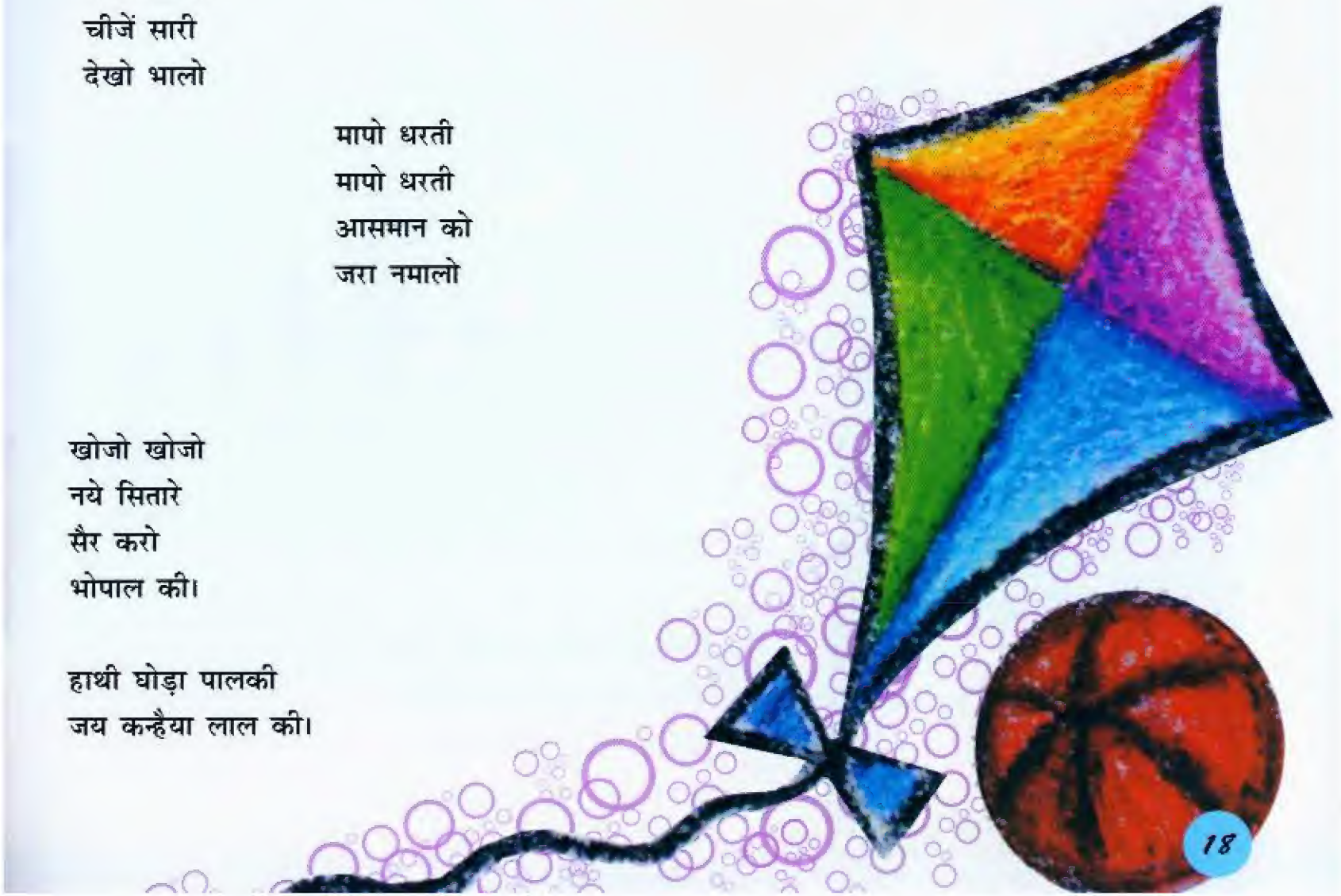

आया राजा आया राजा

पहन मुखौटा आया राजा
धीरे-धीरे छाया राजा

फौजें आयीं फाटा आया
सबने मिल कर रौब जमाया
जनता का दुख बढ़ा रात दिन
बाजा बाजा ताक धिना धिन

नाच रहा था खुल्ला बंदर
चिड़िया थी पिंजरे के अंदर

जिसका जोरा उसका मोरा
राजा का बस छोरा गोरा
जनता रोये जनता गाये
कौन उसे पर चुप करवाये

जनता ने फिर सोचा भाला
राजा का फिर पिटा दिवाला

फाड़ मुखौटा फेंका फाका
राजा भागा राजा भागा।

पतंग बनाओ

आओ
आओ
पतंग बनाओ!

आसमान से ले लो
थोड़ा कागज़ नीला
बांस वनों से
ठड्डे और कमानी ले लो
आटा थोड़ा मां दे देगी
नदियों से कुछ पानी ले लो

बांस छील कर मोड़ो उसको
लेई लगाकर जोड़ों सबको

आसमान जब
खुला खुला हो
और हवा हो
जब मस्ती में

गूंथ गूंथ कर सपनों की
इक लम्बी डोरी
दूर गगन में इसे उड़ाओ

लिखकर मन की
बातें सारी
तारों को
पाती भिजवाओ

आओ
आओ
पतंग उड़ाओ।

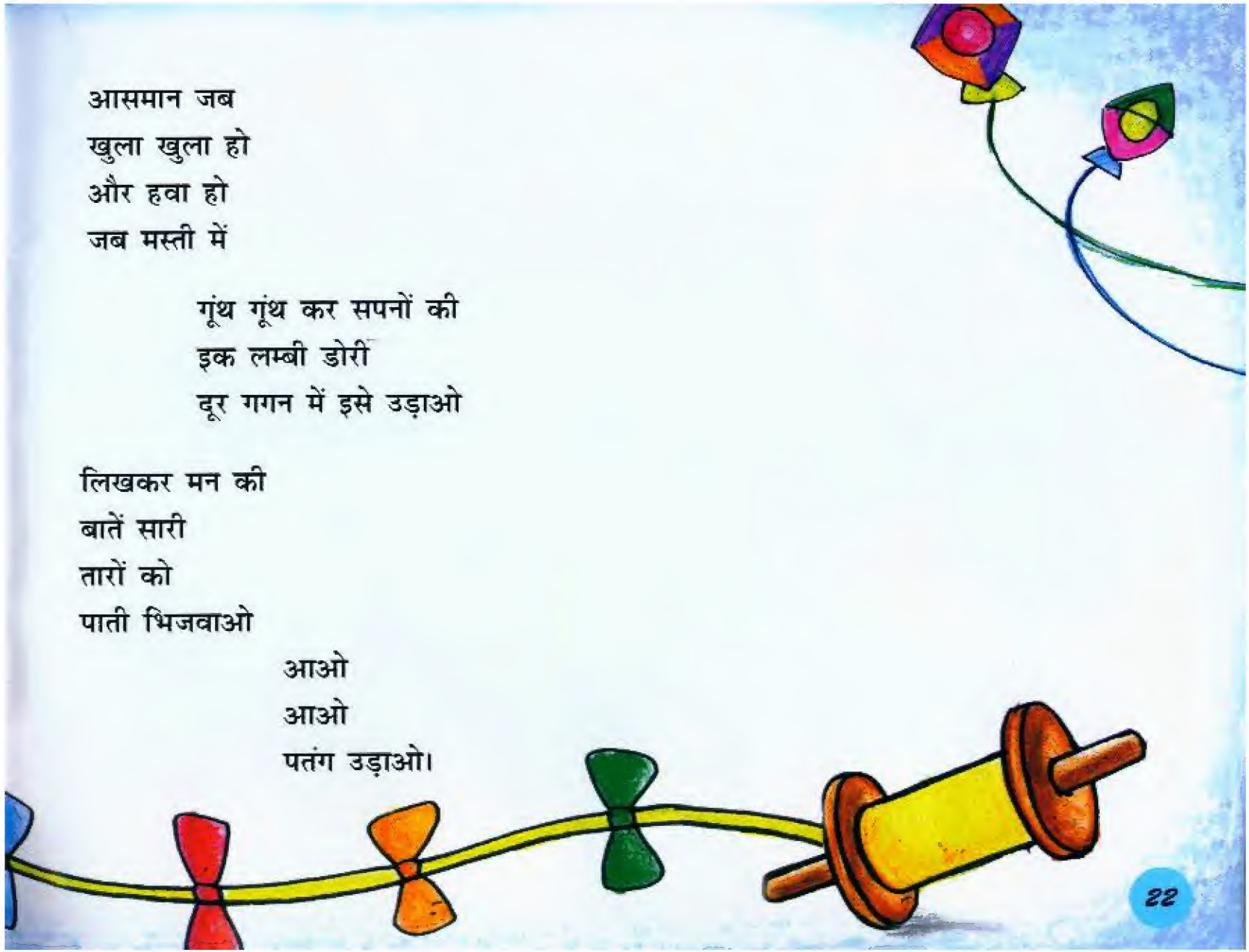

साइकिल का सपना

मीठू की साइकिल ने एक सपना देखा
आसमान की नीली-नीली सड़कों पर
चलना अपना देखा
साइकिल ने इक सपना देखा।

छिपता-छुपता पता नहीं वह कहां से निकला
और सीट पर औचक ही वह आ बैठा
लगता था कुछ ऐंठा-ऐंठा
मुंह फूला था ऐसे जैसे चांद नहीं कोई कद्दू हो
तारों ने उससे पूछा पर वह कुछ न बोला
बना रहा बस गुस्से का गोला
झट से उसने पैडिल मारा
इक बादल ने किया इशारा
तारे दौड़े, तारे दौड़े
आसमान में सारे दौड़े
फुदक-फुदक कर, उचक-उचक कर
कुछ कैरियर पर, कुछ डण्डे पर
कुछ हैंडिल पर ही जा बैठे

पहले तो चांद ज़रा झल्लाया
लेकिन पारा फिर थोड़ा नीचे आया
फिर वह मोटा कद्दू मुस्काया
हैंडिल पर ही लदकर बैठे
न जाने किस तारे ने हाथ बढ़ाकर
घण्टी को थोड़ा छेड़ दिया
टुन-टुन करती बज उठी घण्टियां आसमान में

आसमान में शोर हो गया
साइकिल का सपना कहीं खो गया ।

कौतुक

पापा
सूरज क्या फूलों के रस से बनता है
तुम ही बोलो फिर क्यों पापा
सुबह शाम वो
लाल लाल सा
दिखता है?

पापा पापा
चंदा क्या अंडे से बनता है
तुम ही बोलो फिर क्यों पापा
पीला पीला
दिखता है?

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

BGVS

समाज के विकास में जन विज्ञान आंदोलन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश में गरीबी, गैर-बराबरी, अन्याय और अज्ञान को खत्म करने और सहयोग, समानता और न्याय के आधार पर एक लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में यह आंदोलन लगातार काम कर रहा है।

देश में फैली असाक्षरता को दूर करने के लिए इस आंदोलन ने वर्ष 1989 में भारत ज्ञान विज्ञान समिति की स्थापना की। जिसका मुख्य काम जनता को अपनी बदहाली के कारणों को जानने के लिए प्रेरित करना है। जनता की सोच को तार्किक और विज्ञान सम्मत बनाने के लिए विज्ञान का प्रसार करना है।

आज भारत ज्ञान विज्ञान समिति की सांगठनिक उपस्थिति देश में 22 प्रदेशों के 400 जिलों और 10,000 से अधिक पंचायतों में है। जहां वो साक्षरता, प्राथमिक शिक्षा, स्त्री सशक्तीकरण, पंचायती राज और स्वास्थ्य जैसे विविध सामाजिक क्षेत्रों में कार्यरत है।

संगठन कला जत्थों, संगोष्ठियों, प्रकाशनों, प्रदर्शनियों और अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक तरीकों से समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और भ्रांत धारणाओं को समाप्त करने के लिए लगातार काम कर रहा है। बच्चों के लिए 'मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा कानून' को लाने एवं लागू करने में भी संगठन का महत्पूर्ण योगदान है।

जनवाचन अभियान इसी प्रक्रिया का हिस्सा है। जिसके तहत अब तक 350 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। जिनमें नवसाक्षरों, नवपाठकों के साथ ही बच्चों के लिए श्रेष्ठ और तार्किक साहित्य का प्रकाशन शामिल है। देशी-विदेशी महान लेखकों की प्रसिद्ध रचनाओं के अलावा विभिन्न भाषा के भारतीय लेखकों की रचनाएं भी प्रकाशित की गई है। जिन्हें कम से कम मूल्य में अधिक से अधिक पाठकों को उपलब्ध करवाना इस संगठन का उद्देश्य है। भारत ज्ञान विज्ञान समिति एक गैर मुनाफा वाला संगठन है। श्रेष्ठ साहित्य को जन-जन तक पहुंचाना ही इसका मुख्य मकसद है।